जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी) आगरा से
चित्रकला में पीएच. डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा
2015

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतु

प्रो. रागिनी रॉय,
अध्यक्ष, ड्रॉइंग एण्ड पेण्टिग डिपार्टमेंट,
कला संकाय,
डी.ई.आई. डीम्ड यूनीवर्सिटी,
दयालबाग, आगरा

शोध निर्देशिका

डॉ. मीनाक्षी ठाकुर
असिस्टेंट प्रोफेसर,
ड्रॉइंग एण्ड पेण्टिग डिपार्टमेंट,
कला संकाय,
डी.ई.आई डीम्ड यूनीवर्सिटी,
दयालबाग, आगरा

शोध छात्रा

अपर्णा श्रीवास्तव

मानचित्र

जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख केन्द्र

जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन

शोध संरचना

विषय सूची

शोध संकल्पना

साहित्यावलोकन

परिकल्पना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली

–अनुसंधान अभिकल्प

–प्रदत्त संकलन

अ–प्राथमिक

ब–द्वितीयक

प्रतिदर्श आकार

साक्षात्कार

प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

सीमाएँ

निष्कर्ष

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता

"जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन"

शोध संकल्पना–कला, मानवीय अन्तर्मन की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है। मानवीय अभिव्यक्ति की यह परम्परा आदि काल से अपना अद्वितीय स्थान निर्मित कर सभ्यता के विकास के साथ विकसित एवं परिवर्तित रही है। मनुय ने अपनी अभिव्यक्ति को प्रत्येक युगातीत से आधुनिक युग तक विभिन्न माध्यमों के द्वारा आध्यात्मिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरूपों में अभिव्यक्त किया है।

इस कला संस्कृति के इतिहास से चित्रकला की एक आदिकालीन कलाधारा भित्ति–चित्रण की परम्परा है। भारतीय चित्रकला के उज्जवल इतिहास का आरम्भ भित्ति–चित्रों से ही प्रारम्भ होता है। प्रागैतिहासिक काल से यह कला परम्परा निरन्तर प्रगतिशील रही है। इस परम्परा के उत्कृष्ट उदाहरण हमें प्रागैतिहासिक काल से आरम्भ होकर यूरोपीय देशों एवं भारत में मिर्जापुर, मानिकपुर, सिंघनपुर, होशंगाबाद आदि क्षेत्रों की गुफाओं की भित्तियों पर दृष्टिगोचर होते हैं। इन चित्रों में पर्याप्त सृजनात्मक अभिव्यक्ति, मौलिक उद्भावना और निजी वैशिष्ट्य के दर्शन होते हैं। भारत की इस समृद्ध भित्ति–चित्रण परम्परा का परिष्कृत रूप जोगीमारा, अजन्ता, बाघ, बादामी गुफाओं आदि में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है।[1]

भारतीय चित्रकला के सन्दर्भ में 9 वीं शताब्दी के पश्चात् भित्ति–चित्रों का स्थान छोटे–छोटे लघु–चित्रों (ताड़पत्र, भोजपत्र, पटचित्र, काष्ठफलक आदि) ने ग्रहण कर लिया। 14 वीं शताब्दी में कागज के प्रचलन के फलस्वरूप कागज की चित्रित पोथियों का पर्याप्त विकास हुआ, चूँकि भित्ति की अपेक्षा कागज पर चित्रण कार्य करना अधिक सुगम था। अतः भित्ति–चित्रों का स्थान 15 वीं शताब्दी तक पूर्णरूपेण कागज की पोथियों ने ग्रहण कर लिया, अतः अब भित्ति–चित्रण पतनोन्मुख हो रहा था, सिर्फ महलों, मन्दिरों तथा हवेलियों की सजावट हेतु मुगल सम्राटों तथा हिन्दू शासकों ने भित्ति–चित्रों की परम्परा का संवाहन एवं संरक्षण प्रारम्भ किया, जिसका उदाहरण हमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों के मन्दिरों, भवनों एंव महलों की भित्तियों पर दृष्टिगोचर होता है।

भित्ति–चित्रों की इस अविछिन्न परम्परा का उल्लेख भारतीय साहित्यिक ग्रन्थों– रामायण, महाभारत, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, हर्षचरित आदि कृतियों में वर्णित हैं। इस प्रकार उपरोक्त साक्ष्यों से स्पष्ट है कि भारत में भित्ति–चित्रों की परम्परा अति प्राचीन है। भित्ति–चित्रण की यह परम्परा किसी भी क्षेत्र की हो, उसमें उस क्षेत्र विशेष की समकालीन समाज, कला परम्परा एवं शैलियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस भित्ति–चित्र परम्परा में जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार भारतीय साहित्य का इतिहास भारतीय बोलियों के साहित्य के बिना अपूर्ण है, उसी प्रकार जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का इतिहास उसकी लोककला के बिना अपूर्ण है।

यह क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक स्वरूप, ऐतिहासिक, पर्यटन एवं कलात्मकता आदि सभी विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण विशेषताओं से समृद्ध एवं अद्वितीय है। इन अद्वितीय विशेषताओं के महत्व के फलस्वरूप, मैं इस विषय की ओर आकर्षित हुई, और मैंने जम्मू के भित्ति–चित्रों के केन्द्रों का भ्रमण किया तथा इन भित्ति–चित्रों को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुई और मैंने इस विषय "जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन" का चयन अपने शोध हेतु किया, जिसके द्वारा मैं इन भित्ति–चित्रों के विषय में और अधिक ज्ञान अर्जित कर इन भित्ति–चित्रों का गहन कलात्मक अध्ययन कर सकूँ। डोगरा कालीन भित्ति–चित्रण परम्परा की प्रमुख विशेषता है कि यह परम्परा, शैली एवं समाज की तत्कालीन परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करती है।

इन चित्रों का कला सौन्दर्य विभिन्न पहाड़ी, मुगल, राजस्थानी एवं मध्य भारत की कला शैलियों के अनुपम समन्वय का प्रभाव प्रस्तुत करता है। इन भित्ति–चित्रों में कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों, परिप्रेक्ष्य के

---

[1] . वर्मा, महेन्द्र, भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2006, दिल्ली, पृष्ठ सं.–20

नियमों का निर्वाह प्रत्यक्ष दर्शनीय है। इन भित्ति–चित्रों में धर्म के प्रचार हेतु प्रतीकात्मकता को महत्व प्रदान किया गया है। ये प्रतीकात्मकता पहाड़ी लघु चित्रों से समानता स्थापित करते है। इनमें प्राकृतिक रंगों का प्रभावी प्रयोग है, तथा ये भित्ति–चित्र सजावट के उद्देश्य से निर्मित किये गये हैं। इन भित्ति–चित्रों का विकास क्रमशः हुआ है:–

डोगरा भित्ति–चित्रों का निर्माण धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक विभिन्नताओं की पृष्ठभूमि के समन्वय से हुआ है, जो कि अनुपम एवं अद्वितीय है। यह कला परम्परा तावी घाटी के शान्त प्रभाव एवं लोक कला की ऐतिहासिकता तथा विभिन्न राज्य शासित शासकों के संरक्षण में निरन्तर विकसित हुई है। इन भित्ति–चित्रों में रेखाओं की अटूटता एवं वृत्ताकार प्रभाव है। ये कला विशेषताएँ हिमांचल की कला में भी दृष्टव्य है।

डोगरा भित्ति–चित्रण एवं लघु चित्रण दोनों का आरम्भ नेपाल में चित्रित स्क्रोल चित्रण(Scroll Painting) की सामान्य विशेषता के प्रभाव के साथ हुआ है। नेपाल के 18वीं शताब्दी के स्क्रोल और 19वीं शताब्दी के मध्य के चित्रों दोनों ही शैलियों में भागवत पुराण के विषयों की शैलीगत समानता डोगरा और कांगड़ा के चित्रों में भी दृष्टव्य हैं। डोगरा भित्ति–चित्रों में गति एवं अधिक मानवीय अभिव्यक्ति है। ये भित्ति–चित्रण संस्कृति भारत देश में अपने समय पर समकालीन परम्परा में अत्यन्त प्रसिद्ध रही है, एवं यहाँ के भित्ति–चित्रों में समकालीन कला शैलियों का अद्भुत समन्वय प्रत्यक्ष दर्शनीय है।

सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन–कला जगत की प्राचीन धरोहर शोध कार्य के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के पुर्नावलोकन हेतु मार्ग प्रशस्त करती है। शोध कार्य का अतीत से सम्बन्ध स्थापित करती है, तथा उस समय विशेष की सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं कलात्मक स्वरूप की पूर्ण व्याख्या करती है। जिसका शोध कार्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

मैंने अपने शोध विषय के चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालयों में संग्रहित प्राचीन धरोहर के माध्यम से जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के विषय में सन्दर्भ प्राप्त हुआ। ये भित्ति–चित्र मुझे अत्यन्त रोचक एवं भित्ति–चित्रण क्षेत्र में नवीन लगे। इस विषय पर गहन अध्ययन करने के लिए मैंने जम्मू स्थित पुस्तकालयों व संग्रहालयों का भ्रमण एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन करने के पश्चात् इस विषय को शोध कार्य हेतु चयनित किया। जम्मू में स्थित विभिन्न भित्ति–चित्रों के केन्द्रों का भ्रमण करने के उपरान्त मैं, इन कलात्मक भित्ति–चित्रों से अत्यन्त प्रभावित हुई।

मैंनें, डोगरा कला संग्रहालय, जम्मू के भ्रमण के दौरान संग्रहालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. परिजादा मो. अशरफ से मुझे जम्मू में स्थित और अधिक भित्ति–चित्रों के केन्द्रों का सन्दर्भ मिला, मन्दिरों के भ्रमण के दौरान मुझे श्री रामजी–का–मन्दिर के पुरोहित एवं अध्यक्ष राजेश कुमार मिश्रा जी से मन्दिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। इस विषय पर अध्ययन सामग्री के लिए मैंने नैशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट–नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय–नई दिल्ली, जम्मू यूनीवर्सिटी पुस्तकालय, डोगरी संस्था–जम्मू आदि का भ्रमण एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्र अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावी हैं। डोगरा कालीन भित्ति –चित्रों में भारतीय चित्रण परम्परा की भाँति देवी–देवताओं के चित्र, मुगल, ईरानी, हिन्दू चित्रकलाओं की विभिन्न शैलियों का प्रभाव दर्शनीय है। मैंने लेखक विश्व चन्द्र ओरी की पुस्तक "द टेकनीक ऑफ पहाड़ी पेण्टिग" (The Technique Of Pahari Painting) का अध्ययन किया, जिसमें मुझे पहाड़ी चित्रों एवं डोगरा राजवंश की ऐतिहासिकता व प्राचीनता की जानकारी प्राप्त हुई। लेखिका मीरा सेठ की पुस्तक "डोगरा वॉल पेण्टिंग इन जम्मू एंड कश्मीर" (Dogra Wall Painting in Jammu And Kashmir) एवं डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी की पुस्तक "भारतीय भित्ति–चित्रकला" में भित्ति–चित्रकला की प्रागैतिहासिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक राजकुमार की पुस्तक "पेण्टिग एंड लाइफ स्टाइल ऑफ जम्मू रीजन (एर्ली 17th टू 19th

सेंचुरीं ए.डी.)" (Painting And Lifestyles Of Jammu Region – from 17th to 19th century A.D.) के द्वितीय वाल्यूम में प्राप्त चित्रों एवं जीवन शैली के विषय मेरे लिए अत्यन्त ज्ञानवर्धक सिद्ध हुए।

लेखक सुखदेव सिंह चरक की पुस्तक "A Short History of Jammu Raj from Earlist Times of 1846 A.D." में जम्मू राज्य का प्रारम्भिक परिचय, भाषा, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पारम्परिक इतिहास, राजनैतिक विभाजन, राज्यवंशों का परिचय, डोगरा राज्यवंश का उत्थान, जम्मू की चित्रकला में विभिन्न शासकों के योगदान का सन्दर्भ प्राप्त होगा। Marg- A Magazine Of The Arts, सितम्बर 2014 के अंक में मुझे जम्मू की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, डॉ. ए. के. बिलावारिया की पुस्तक (Jammu Wall Painting) "जम्मू वॉल पेण्टिग" में डोगरा कलम के विषय, भित्ति–चित्रों की तकनीक, जम्मू के भित्ति–चित्रों का सामाजिक महत्व के ज्ञान को समझने में सहायक सिद्ध होगा। डॉ. N. Seshagiri की पुस्तक "Encyclopaedia of Cities and Towns in India" (II Volums) में जम्मू के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, उत्सव एवं अन्य कलाओं के विषयों में जानकारी प्राप्त होगी।

इसके अतिरिक्त वेबसाइट्स, जनरल्स, अप्रकाशित लेख के अवलोकन से मुझे शोध विषय से सम्बन्धित उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि इसमें जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के कलात्मक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं भारतीय भित्ति–चित्रण परम्परा में "जम्मू की डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के कलात्मक अध्ययन" की रूपरेखा को तैयार करने के सन्दर्भ में कला के तत्वों के आधार पर शोधविषय के कलात्मक परिप्रेक्ष्य की सूक्ष्म विवेचना प्रस्तुत करना की उत्कृष्ट चेष्ठा करूँगीं।

परिकल्पना–परिकल्पना शोध कार्य हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक शोध कार्य की सफलता व उसकी वैधता का परीक्षण किया जाता है, एवं इसके लिए पूर्व ज्ञापित ज्ञान के आधार का होना अति आवश्यक है। इस सन्दर्भ में यह सत्य है कि प्राचीनता के आधार पर ही आधुनिक विचारधारा का निर्माण होता है, उसी प्रकार भारतीय भित्ति–चित्रण के प्राचीन इतिहास पर ही इस क्षेत्र का अपूर्व ज्ञान उपलब्ध है।

भारतीय भित्ति–चित्रण की परम्परा ऐतिहासिक एवं प्राचीन है। इस प्राचीन परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण हमें अजन्ता, एलोरा, बाघ, बादामी गुफा आदि कलाओं की शैलियों में दृष्टव्य है। तत्पश्चात् लघु चित्रण परम्परा में भी हमें भित्ति–चित्रण की कला शैलियों का समन्वित रूप दृष्टिगोचर होता है, जिनमें कला के तत्वों, सिद्धान्तों तथा कला निर्मिती के सभी आवश्यक तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं। इस सदर्न्भ में, मैं भारतीय भित्ति–चित्रण की अतुलनीय प्राचीन परम्परा में जम्मू की डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का एक नवीन सम्बन्ध स्थापित करने के परिप्रेक्ष्य में चित्रों के कलात्मक अध्ययन के माध्यम से इन भित्ति–चित्रों के महत्वपूर्ण योगदान को प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी।

ये भित्ति–चित्र कला में अपने कलात्मक योगदान के साथ–साथ राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी, लघु चित्र, लोक कला की शैलियों के प्रभावों के वैविध्यपूर्ण पक्षों को प्रत्यक्ष करने में महत्वपूर्ण है, तथा ये भित्ति–चित्र भारतीय कला विषयों की सांस्कृतिक, धार्मिक परम्परा–रामायण, कृष्णलीला, महाभारत आदि के अद्भुत समन्वय को प्रदर्शित करते हैं।

उद्देश्य व लक्ष्य–शोध कार्य के विषय "जम्मू की डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन" के वर्णात्मक अध्ययन हेतु उद्देश्य व लक्ष्य इस प्रकार हैं–

- आदि कालीन भित्ति–चित्रण परम्परा का संक्षिप्त ऐतिहासिक सर्वेक्षण का अध्ययन।
- जम्मू क्षेत्र का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य तथा डोगरा संस्कृति के भित्ति –चित्रण के उद्भव तथा विकास का अध्ययन।

- डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख स्त्रोतों में वास्तु शैली, विषयवस्तु, इनमें प्रयुक्त रंग, माध्यम एवं तकनीक में विभिन्नता एवं एकता दोनों को ही सूक्ष्म विवेचना के आधार पर अध्ययन करने का प्रयास करूँगीं।
- डोगरा भित्ति–चित्रों में, समाज की तत्कालीन परम्परा, लोक कला एवं शैलियों के वैविध्यपूर्ण अद्वितीय समन्वय का अध्ययन।
- भित्ति–चित्रों के आध्यात्मिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरूपों की विवेचना का विस्तृत अध्ययन।
- समकालीन परिस्थितियों में डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का संरक्षण तथा आधुनिक कला क्षेत्र में भित्ति–चित्रों के महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन करना।

चरः–मेरे शोध कार्य के आधार सूत्र निम्नलिखित हैं–

- जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्र, मन्दिरों एवं शाही महल का स्थानीय भ्रमण।
- मन्दिरों के पुरोहित
- विभिन्न भित्ति–चित्र केन्द्रों के अध्यक्ष
- विभिन्न कला संग्रहालय एवं पुस्तकालय
- कला समीक्षक
- संग्रहालयों के अध्यक्ष
- ए.एस.आई.– जम्मू से साक्षात्कार
- डोगरी संस्था
- इण्टरनेट

कार्य प्रणालीः–

- **अनुसंधान अभिकल्प**–इस शोध कार्य का अध्ययन भित्ति–चित्रों के वर्णात्मक एवं अनुसंधान पर आधारित रहेगा।
- **प्रदत्त संकलन**–प्रदत्तों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेंगें।

प्राथमिक स्त्रोत–जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के केन्द्रों का भ्रमण, भित्ति–चित्र, डोगरी संस्था एवं संग्रहालय के अध्यक्षों से साक्षात्कार प्रमुख है।

द्वितीयक स्त्रोत–पुस्तकें, प्रकाशित पत्र, पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट एवं संग्रहालयों एवं पुस्कालयों के भ्रमण आदि।

–मेरी सम्मानीय निर्देशिका के साथ विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार–मैंने शोध कार्य हेतु 250 प्रतिदर्शों का चयन किया है।

साक्षात्कार–मन्दिरों के अध्यक्षों, संग्रहालयों के प्रबन्धकों एवं उपप्रबन्धकों, कला प्रेमियों, समीक्षकों एवं पुरातत्व संग्रहालयों के अध्यक्षों से साक्षात्कार किया जायेगा।

प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि–प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि अवलोकन पर आधारित रहेगी।

सीमाएँ–प्रत्येक शोध कार्य एक समयसीमा पर आधारित होता है। मैं अपने शोध कार्य की समयावधि में एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर, अपना शोध कार्य पूर्ण करूँगी। मेरे शोध कार्य के विषय जम्मू के डोगरा कालीन केन्द्रों के भित्ति–चित्रों के अध्ययन के साथ ही मैं उन चित्रों का भी अध्ययन करूँगीं, जिनमें से कुछ चित्र अब नष्ट हो गये हैं, जिनके विषय में, मैं किसी भी प्रकार से जानकारी प्राप्त करके इस शोध विषय

का पूर्ण अध्ययन करने का प्रयत्न करूँगी, तथा मेरा शोध विषय जम्मू क्षेत्र तक ही सीमित है, एवं उपयुक्त मौसम में जाना भी आदि, मेरी सीमाएँ हैं।

निष्कर्ष—इस शोध कार्य में उपरोक्त सभी प्रक्रियाओं के आधार पर मुझे भारतीय भित्ति—चित्रण परम्परा में जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति—चित्रों का कलात्मक एवं वर्णात्मक अध्ययन की मौलिकता को प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त होगी।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता—प्राचीन कला धरोहरों से हमें तत्कालीन घटित प्रत्येक ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं सन्दर्भ मिलता है। इसी प्रकार जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति—चित्रों से हमें उस समय की ऐतिहासिकता के साथ साथ कला संस्कृति का सम्बन्ध प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। हमारे आधुनिक परिवेश में भारतीय कला एवं संस्कृति का विशेष महत्व रहा है। इसी प्रकार आधुनिक कला परम्परा में डोगरा कालीन भित्ति—चित्रों के योगदान के साथ ही कलात्मक पक्ष को प्रदर्शित किया जायेगा।

जम्मू में डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों का कलात्मक अध्ययन

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका–भारतीय भित्ति–चित्रण परम्परा का संक्षिप्त ऐतिहासिक सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय–जम्मू क्षेत्र का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

1.1–डोगरा संस्कृति की उत्पत्ति, इतिहास एवं परम्परा

द्वितीय अध्याय– जम्मू के विभिन्न राजवंशों में भित्ति–चित्रण की परम्परा व अन्य कलाएँ

2.1–राय राजवंश में कला परम्परा

2.2–धर राजवंश में कला परम्परा

2.3–देव राजवंश में भित्ति–चित्रण परम्परा

2.4–डोगरा राजवंश में भित्ति–चित्रण परम्परा

2.5–काष्ठ चित्रित पैनल

2.6–ग्रन्थ चित्र (लघु चित्रण)

2.7–लोककला एवं साहित्य

तृतीय अध्याय–डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख स्त्रोत

3.1–गुफा चित्र

3.2–मन्दिर चित्र

3.3–शाही महल के चित्र

चतुर्थ अध्याय–डोगरा कालीन परम्परागत् भित्ति–चित्रों की प्रमुख विषयवस्तु

4.1–धार्मिक

4.2–सांस्कृतिक

4.3–व्यक्तिगत

4.4–प्रकृति चित्रण एवं अलंकरण

पंचम अध्याय–डोगरा भित्ति–चित्र संयोजन में सौन्दर्यात्मक अनुभूति

5.1–सामंजस्य एवं सहयोग

5.2–संतुलन

5.3–प्रभाविता

5.4–अनुपात

5.5–विरोध

5.6–एकता

5.7–गति या लय

षष्ठम अध्याय–डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख स्त्रोतों का कलापूर्ण विश्लेषणात्मक अध्ययन

6.1–गुफा चित्र

6.1.1–विषयवस्तु

6.1.2–माध्यम एवं तकनीक

6.1.3–शैलीगत विशेषताएँ

6.2–मन्दिर चित्र

6.2.1–विषयवस्तु

6.2.2–माध्यम एवं तकनीक

6.2.3–शैलीगत विशेषताएँ

6.3–शाही महल के चित्र

6.3.1–विषयवस्तु

6.3.2–माध्यम एवं तकनीक

6.3.3–शैलीगत विशेषताएँ

सप्तम अध्याय–भारतीय भित्ति–चित्रण परम्परा में डोगरा भित्ति–चित्रों का महत्व

7.1–समकालीन परिस्थितियों में डोगरा भित्ति–चित्रों का संरक्षण

उपसंहार–आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता

परिशिष्ट–सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

पत्र–पत्रिकाएँ

कैटलॉग

इनसाइक्लोपिडिया

इण्टरनेट वेबसाइट्स

चित्रसूची

मानचित्र

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका–भूमिका के अन्तर्गत मैं भारतीय भित्ति–चित्रण परम्परा का संक्षिप्त ऐतिहासिक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन करूँगी।

प्रथम अध्याय–प्रथम अध्याय में जम्मू क्षेत्र का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ डोगरा संस्कृति की उत्पत्ति, इतिहास एवं परम्परा का अध्ययन उजागर किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय–द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत जम्मू के विभिन्न राजवंशों में भित्ति–चित्रण की परम्परा व अन्य कलाओं में काष्ठ चित्रित पैनल, लघु चित्रण तथा लोककला एवं साहित्य का अध्ययन करने की चेष्ठा की जायेगी।

तृतीय अध्याय–तृतीय अध्याय के अन्तर्गत जम्मू की डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख स्त्रोत जिनमें गुफाचित्र (पीर खो केव), मन्दिर चित्र (रघुनाथ मन्दिर–(बुर्ज, जम्मू, सुई सिम्बली, मानेसर, पुरामण्डल, मूलचाक, मिरान साहिब की समाधि का मन्दिर, प्रेम दास की समाधि का मन्दिर) एवं शाही महल(रामनगर) के चित्रों का गहन अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय–चतुर्थ अध्याय में डोगरा कालीन परम्परागत भित्ति–चित्रों की प्रमुख विषयवस्तु का अध्ययन किया जायेगा, जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत एवं प्रकृति चित्रण व अलंकरण प्रमुख है।

पंचम अध्याय–पंचम अध्याय के अन्तर्गत डोगरा भित्ति–चित्र संयोजन में सौन्दर्यात्मक अनुभूति का अध्ययन किया जायेगा।

षष्ठम अध्याय–षष्ठम अध्याय में डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के प्रमुख स्त्रोंतों का कलापूर्ण विश्लेषणात्मक अध्ययन के अन्तर्गत मैं, गुफा, मन्दिर, शाही महल तीन केन्द्रों के भित्ति–चित्रों की विषयवस्तु, माध्यम एवं तकनीक, चित्रों की शैलीगत विशेषताओं के उत्कृष्ट समन्वय के प्रभाव को प्रदर्शित करने का प्रयत्न करूँगी।

सप्तम अध्याय–सप्तम अध्याय में, मैं अपने शोध कार्य के माध्यम से भारतीय भित्ति–चित्रण परम्परा में डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के महत्व को उजागर कर जम्मू की समकालीन परिस्थितियों में डोगरा भित्ति–चित्रों के संरक्षण पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगी।

उपसंहार–उपसंहार के अन्तर्गत जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों के कलात्मक अध्ययन का आधुनिक युग में शोध कार्य के अध्ययन की प्रासंगिकता को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करूँगीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, ओ. पी. : भित्तिचित्रों की जांच और संरक्षण, इन्टैक, भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद, लखनऊ एवं संदीप प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002, ISBN 81-7574-122-8

2. घोष, ए. : अजंता का वैभव, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली 1916, ISBN -81-230-013-7

3. जखवानी, के. के. : कला की परख, आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन तथा पुस्तक विक्रेता, कश्मीरी गेट, दिल्ली.2

4. द्विवेदी, प्रेमशंकर
   द्विवेदी, मनीष कुमार : भारतीय भित्ति चित्रकला, कला प्रकाशन, बी.एच.यू. वाराणसी–5, प्रथम संस्करण–2010, ISBN 978-81-89921-93-4

5. द्विवेदी, प्रेमशंकर : गीतगोविन्द पहाड़ी चित्रकला में, (भाग–5), कला प्रकाशन, वाराणसी–5, प्रथम संस्करण–2010, ISBN -978-81-89921-75-0

6. द्विवेदी, प्रेमशंकर : वाराणसी की भित्ति चित्रकला में दुर्गा, कला प्रकाशन, वाराणसी–5, द्वितीय संस्करण– 2007, ISBN -81-87566-53-9

7. वर्मा, महेन्द्र : भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण –2006, ISBN – 81-8090-117-3

8. श्रीवास्तव, कृष्णचन्द्र : कला तथा पुरातत्व प्रकाशन, यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद–211002

BIBLIOGRAPHY

1. Archer, W.G. - *Indian Paintings From The Punjab Hills,* Oxford University Press, Vol.-1, 1st edition- 1973, Delhi, ISBN-08667 002 2

2. Billawaria, A.K. - *Jammu Wall Paintings,* Jay Kay Book House, Jammu Tawi-180001 (J&K) Ist edition-1991.

3. Charak, Sukh Dev Singh - *A Short History Of Jammu Raj From Earliest Times to 1846 A.D*, Ajay Publication, Ist edition-1985, Jammu.

4. Charak, Sukh Dev Singh - *Life and Times of Maharaja Ranbir Singh (1830-1885),* Jay Kay Book House, Jammu

5. Charak, Sukh Dev Singh - *Jammu Ragamala Paintings*, Abhinav Publication, Ist edition-1998, Delhi.

6. Collins,St James - *The Palaces of India,* Great Britain by the Hillaiadom Press Uxbridge, London, Ist edition-1980, ISBN-0002 11 6782

7. Dalgeet, Jain,P.C - *Indian Miniature Paintings*, Manifestation of a creative Mind, Published by Brijbasi Art Press Ltd, II Edition-2006, New Delhi-1100 20, ISBN: 81-8385-2270.

8. Kamboj, B.P. - *Wall Early Painting of Garhwal*, Indus Publishing Company, 2003, New Delhi, ISBN: 81-7387-139-6.

9. Kumar, Raj - *Paintings And Lifestyles of Jammu Region (from 17th to 19th century AD),* Kalpaz Publications, Vol.-2, Delhi-11005

10. Naga, Shantilal - *Miniature Painting on the Holy Ramayana,* B.R. Publishing Carporation (A Division of BRPC – India Ltd), Ist edition – 2001 Delhi-110035, ISBN: 81-7646-222-5

11. Ohri, Vishwa Chander - *The Technique Of Pahari Paintings,* Aryan Books International, New Delhi, 1ST edition-2001, ISBN-81-7305-211-5.

12. Sath, Mira - *Dogra Wall Paintings in Jammu &Kashmir,* Oxford University Press, Ist edition- 1987, Delhi, ISBN: 19 561 549 2

ENCYCLOPAEDIA, MAGAZINE AND CATALOGUE

1. Seshagiri, N. - "*Encyclopedia of Cities and Towns in India*" (Vol.-II) (Jammu & Kashmir) and (Himachal Predesh), Gyan Publishing House, New Delhi – 110002, I[st] edition-2008, ISBN- 81-212-0970

2. Agrawal, Manisha - *MARG- MAGAZINE OF THE ARTS,* FWART investments limited, Tata. Vol.-66, N.-1, September-2014.

3. Dogra Art Museum, Jammu- Save Heritage, Govt. of Jammu and Kashmir, Department of Archives, Archaeology & Museum.

WEBSITES

1. WWW. Google .com
2. http://jmc.Nic.in/
3. WWW. Jammu.com
4. WWW.Wikipidia. com
5. WWW. Timesofindia.indiatimes,com
6. WWW. Tribuneindia.com
7. WWW. Jammu.com

चित्र सूची

चित्र सं.–1, राजा भृतहरि अपनी रानी से भिक्षाटन करते हुए, रघुनाथ जी मन्दिर, **(बुर्ज),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–2, सीता स्वंयवर, रघुनाथ जी मन्दिर, **(बुर्ज),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–3, राम के राजतिलक के पूर्व उनके चारों ओर कार्यक्रम प्रस्तुत करते राज दरबारी, रघुनाथ जी मन्दिर, **(बुर्ज),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–4, राम और रावण की सेना के मध्य युद्ध, रघुनाथ जी मन्दिर, **(जम्मू),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–5, कृष्ण और राधा, रघुनाथ जी मन्दिर, **(जम्मू),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–6, युद्ध दृश्य, सचेत सिंह का शयन कक्ष, **(रामनगर महल),** जम्मू, 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–7, यशोदा मक्खन निकालते हुए, रघुनाथ जी मन्दिर, **(सुई सिम्बली),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको

चित्र सं.–8, कालिया मद मर्दन, प्रेम दास की समाधि, **(सुई सिम्बली),** 19 वीं शताब्दी, फ्रेस्को सेको